International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

वैशेषिक दर्शन – आचार मीमांसा

पूनम रानी
शोधार्थी
महर्षि दयानन्द युनिवर्सिटी, रोहतक

आचार मीमांसा प्रत्येक दार्शनिक ग्रन्थ की आधारशिला है। अतः यही कारण है कि प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति यह सोचने पर मजबुर हो जाता है कि जीवन क्या है? संसार क्या है? इस संसार से उसका संयोग और वियोग क्यों और कैसे होता है? क्या कोई ऐसी शक्ति विद्यमान है जो उसे नियन्त्रित कर रही है? क्या मनुष्य जो कुछ भी है उसमें वह कोई बदलाव कर सकता है? ये कुछ ऐसे प्रश्न है जो एक रहस्मयी पारलौकिकता को स्पर्श करते हैं दूसरी तरफ यह कहा जा सकता है कि जो प्रयत्न श्रृंखला सार्थक और सम्यक् उद्देश्य की पूर्ति के लिए दृष्ट को अदृष्ट के साथ या दृष्ट को दृष्ट के साथ जोड़ती है वह लौकिक क्षेत्रा में आचार कहलाती है।

वैशेषिक ग्रन्थों में यत्रा तंत्रा जो संकेत प्राप्त होते हैं उनके आधार पर यह निर्णय लिया गया है कि वैशेषिकों का आचारपरक दृष्टिकोण वेदमूलक है। इस सिद्धान्त की पुष्टि करते हुए महर्षि कणाद ने कहा है कि लौकिक अभ्युदय और पारलौकिक निःश्रेयस्व तत्त्व ज्ञान जन्य है, तत्त्व ज्ञान धर्म जन्य है और धर्म का प्रतिपादन होने और ईश्वर उक्त होने के कारण वेद ही धर्म का मूल है।[1]

वैशेषिक आचार मीमांसा के अवयव

[1] अथातो धर्म व्याख्यास्यामः
यतोअभि–उदयनिः श्रेयससिद्धि सः धर्मः
तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्, वै0 सू0 11.1–3 (महर्षि कणाद)

वैशेषिक आचार मीमांसा के प्रमुख तीन अवयव है सुख–दुःख और मोक्ष। वैशेषिकों की आचार परक विचारधारा में सुख का परित्याग मोक्ष मार्ग की एक प्रमुख इतिकर्त्तव्यता है। सुख भी अत्यन्त दुःख का ही रूप है, और दुःख से छुटकारा मोक्ष है।

धर्म–अधर्म विवेक

गुणों की गणना में धर्म–अधर्म को वैशेषिक दर्शन ने समाविष्ट किया है जिससे सिद्ध होता है कि धर्म और अधर्म गुण आत्मा के अन्दर विद्यमान रहते है तर्क संग्रहकार ने भी कहा है– विहित कर्मो से जन्य अदृष्ट धर्म और निषिद्ध कर्मो से उत्पन्न अदृष्ट अधर्म कहलाता है।[2]

कुछ विद्वानों का मत है कि धर्म और अधर्म शब्द सत्कर्म या असत्कर्म के नहीं बल्कि पुण्य और पाप के बोधक है तथा सत्कर्म और असत्कर्म जिनके फल हैं।[3]

शब्द प्रमाण को अलग से प्रमाण न मानते हुए वैशिषकों ने धर्म के विषय में वेद को ही प्रमाण माना है। वैशेषिक दार्शनिक सुख और दुःख के विषय में बतलाते है कि सुख और दुःख एक दूसरे से इतने जुड़े हुए है कि दुःख का निवारण करने के लिए सुख का परित्याग करना अतिआवश्यक है। सुख–दुःख दोनों आत्मा के आगन्तुक गुण है। इनके विनाश से आत्मा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इन सभी आगन्तुक गुणों के निवृत्त हो जाने से आत्मा मोक्ष को जाता है। इसके अतिरिक्त बौद्धों ने यह उपदेश दिया है कि सुख–दुःख से मुक्ति तब तक सम्भव नहीं जब तक आत्मा की नित्यसत्यता में विश्वास करना नही छूट जाता है। बौद्धों के सिद्धान्त के विपरीत वैशेषिक आत्मा को नित्य मानते हैं किन्तु उनकी यह भी मान्यता है कि सुख–दुःख से छुटकारा और जीवन का अन्तिम

[2] विहितकर्मजन्योधर्मः निषिद्ध कर्मजन्यः तु अधर्मः, तर्कसंग्रह (अन्नंभट्ट) पृ0 सं0 97

[3] भारतीयदर्शन की रूपरेखा (हरियन्ना) पृ0 सं0 260

लक्ष्य मोक्ष तब तक प्राप्त नहीं होता जब तक यह न मालूम हो जाए कि आत्मा सभी अनुभव से परे है।[4]

ईश्वर

मोक्ष का सीधा सम्बन्ध जीवात्मा से है तथा जीवात्मा का सीधा सम्बन्ध परमात्मा से है। जीवात्मा और परमात्मा भेद से आत्मा दो प्रकार की होती है। वैशषिक दर्शन में ईश्वर का उल्लेख नहीं है परन्तु 'तद्वचनादाम्नायस्य' इस सूत्रा से ईश्वर की झलक अवश्य प्राप्त होती है अतः उत्तरवर्ती भाष्यकार ने यह कहा है कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि के नित्य परमाणुओं से ईश्वर सृष्टि का निर्माण ब्रह्माण्डकुलाल के रूप में कुम्भकार की तरह वह सृष्टि की निमित्त कारण है उपादान कारण नही, परमाणुओं से सृष्टि की रचना करने के कारण। परमाणु अचेतन है अतः वे स्वतंत्रा रूप से विषयों को धारण करने में असमर्थ है। इसके अलावा जीवात्मा में कर्म करने की जो शक्ति विद्यमान है वह ईश्वर द्वारा प्रेरित है। ईश्वर का कोई, किसी प्रकार का शरीर नहीं परन्तु फिर भी वह इच्छा, ज्ञान और प्रयत्न तीनों गुणों से सम्पन्न तथा सर्वज्ञ, सर्वशक्ति मान और कर्म फलों का दाता हैं। जीव द्वारा किए गए सभी कर्मो का फल ईश्वर के अधीन है। वात्स्यायन ने आत्मा को ही ईश्वर का स्वरूप माना है, उनका मानना है कि जीवात्मा में परमात्मा वाले सभी गुण विद्यमान है परंतु आत्मा में वे सारे गुण अनित्य है तथा ईश्वर में नित्य है।

उदयनाचार्य ने ईश्वर की सिद्धि के लिए आठ मत प्रस्तुत किए है–

1. जगत् कार्य है, उसका कोई निमित्त कारण होना चाहिए वह ईश्वर है।
2. ईश्वर के बिना अदृष्ट परमाणुओं में गति का संचार नहीं हो सकता है।
3. जगत् परमाणुओं को जो धारण करने वाला है वही ईश्वर है।
4. पदों के अर्थो को व्यक्त करने की शक्ति प्रदान करने वाला ईश्वर है।
5. वेदों को देखकर उनके प्रवक्ता ईश्वर का अस्तित्व प्रमाणित होता है।

[4] भारतीय दर्शन रूपरेखा (हरियन्ना) पृ0 सं0 260

6. श्रुति ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करती है।
7. वेदवाक्य पौरुषेय है और वेदकर्त्ता पुरुष ही ईश्वर है।
8. द्वित्वादि संख्या के संदर्भ में अपेक्षा बुद्धि का आश्रय भी परिशेषानुमान से ईश्वर सिद्ध होता है।[5]

चार्वाक, बौद्ध और जैन ईश्वर की सत्ता को नहीं मानते है। सांख्या, वैयाकरण, मीमांसक भी ईश्वर को नही अपितु क्रमशः पुरुष, परावाणी तथा कर्म को मानते है। न्याय, वैशेषिक, योग तथा वेदान्त में ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार किया गया है, फिर भी इनके ईश्वर–विवेचन में भी पर्याप्त मतभेद दिखाई देते हैं। ईश्वर के अस्तित्व के संदर्भ में चार्वाक आदि ने जो आपत्तियाँ प्रस्तुत की है उनका भी उदनाचार्य ने युक्तिपूर्वक खण्डन करके यह सिद्ध किया कि ईश्वर का अस्तित्व है। वेदान्त और वैशेषिक के ईश्वरविषयक चिन्तन में यह अन्तर है कि वेदान्त ईश्वर शब्दप्रमाणगम्य है जबकि वैशषिक उसको अनुमानप्रमाणगम्य मानते हैं।

मोक्ष

वैशेषिक दर्शन के अनुसार जीवात्मा के दुःखों का पूर्ण निरोध ही मुक्ति है जबकि अक्षपाद गौतम के अनुसार दुःखो की अत्यन्त निवृत्ति ही अपवर्ग है।[6] जन्म का विनाश और पुनर्जन्म का अभाव ही आत्यान्तिक दुःख निवृत्ति है।

भाष्यकार ने इस विषय में कहा है कि शरीर का कर्म के क्षय से नाश हो जाता है और धर्म, अधर्म रूप कारण के न रहने से आगे किसी शरीर की उत्पत्ति नही होती अतः सुख–दुःख, धर्म–अधर्म, का अत्यन्त अभाव ही आत्मा का अपवर्ग (मोक्ष) है।[7]

---

[5] कार्यायोजनधृत्यादेः पदात् प्रत्ययतः श्रुतेः।
वाक्यात् संख्याविशेषाच्च साध्यो विश्वविद्व्ययः।। न्याय0 कु0 (उदयनाचार्य)

[6] तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः न्याय सूत्रा (गौतम) 1.1.22

[7] निर्बीजस्यात्मनः शरीरादिनिवृत्ति पुनः शरीराघनुत्पतौ

वल्लभाचार्य ने न्यायसूत्राकार के कथन को समान रूप से स्वीकार किया है।[8]

श्रीधर आचार्य ने भी इस विषय में कहा है कि अहित की आत्यान्तिक निवृत्ति ही मोक्ष है, उनके अनुसार मोक्ष अवस्था में आत्मा अशरीरी ही होता है। इस अवस्था में आत्मा को सुःख–दुःख स्पर्श नहीं कर सकते, मोक्ष अवस्था में सुख–दुःख का सर्वथा अभाव होने से। श्रीधर आचार्य मोक्ष अवस्था में आत्मा को उदासीन मानते है उन्होंने कहा है कि यदि आत्मा को आनन्दस्वरूप मान लेंगे तो संसार अवस्था में विद्यमान आत्मा में आनन्द की सतत् अनुभूति होती है। इस प्रकार आत्मा में नित्य सुख नाम का कोई गुण दिखाई नही देता। यदि मोक्ष अवस्था में सुख की अवस्थिति मानी जाएगी तो राग का स्वरूप ही स्वीकार्य होगा। यदि राग विद्यमान होगा तो वहाँ तो द्वेष भी विद्यमान रहेगा।[9]

महर्षि कणाद ने पदार्थो के साधर्म्य–वैधर्म्य तथा रूपतत्त्वज्ञान को मोक्ष का कारण माना है जबकि आचार्य श्रीधर ने धर्म को निःश्रेयस का साधन माना है और तत्त्वज्ञान को धर्मज्ञान का कारण माना है। अतः तत्त्वज्ञान परम्परा से मोक्ष का साधन माना है।[10]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते है कि मोक्ष ज्ञान काम्य, नित्य और नैमित्तिक कर्मो के संचय से होता है इनमें से काम्य कर्म का त्याग आवश्यक है तथा नित्य, नैमित्तिक कर्मो के द्वारा प्रत्यवायों का क्षय होता है और विमल ज्ञान उत्पन्न होता है इस प्रकार

दग्धेन्धनत्ववत् उपशमो मोक्षः प्र0 पा0 भा0 (प्रशस्तपाद आचार्य) पृ0 सं0 211

[8] तत्रा दुःखात्यन्ताभावोऽपवर्गः न्याय लीलावती (वल्लभाचार्य) पृ0 सं0 580

[9] तन्निःश्रेयसं धर्मादेव भवति द्रव्यादितत्त्वज्ञानं तस्य कारणत्वेन निःश्रेयससाधनमित्यभिप्रायः, न्याय कन्दली (श्रीधर आचार्य) पृ0 सं0 313

[10] अतो नास्त्यात्मनो नित्यं सुखं

तदभावान्न तदनुभवो मोक्षावस्था, किन्तु समस्तात्म–

विशेषगुणोच्छेदोपलक्षिता स्वरूपस्थिति, न्या0 क0 (श्रीधराचार्य) पृ0 सं0 29

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

विमल ज्ञान का अभ्यास द्वारा परिपक्व हो जाने से व्यक्ति को अपवर्ग प्राप्त होता है। अर्थात् भोग से पूर्व उत्पन्न धर्म व अधर्म का विनाश हो जाता है। धर्म–अधर्म के संचय न करने के लिए व्यक्ति को दूसरा शरीर प्राप्त नही होता है इस प्रकार पूर्व शरीर से जीवात्मा के संयोग का जो अभाव होता है वह मुक्ति है और वहीं वैशेषिकों की आचार मीमांसा का अन्तिम ध्येय है।